VII मुद्रा प्रबंध

VII.1 अच्छी गुणवत्ता के बैंक नोट तथा सिक्कों की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करना भारतीय रिज़र्व बैंक का एक महत्वपूर्ण कार्य है। इस उद्देश्य के लिए रिज़र्व बैंक ने वर्ष 2006-07 के दौरान बैंक नोटों की गुणवत्ता में सुधार के साथ-साथ बैंक नोटों की आम जनता की मांग को पूरा करने के उपाय जारी रखे। बैंक नोटों की मांग लगभग पूरी हो गई। निरंतर प्रयासों के चलते 10 रुपए मूल्यवर्ग के बैंक नोटों की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार हुआ। मुद्रा तिजोरियों में नोट प्रोसेसिंग व्यवस्था को विभिन्न मुद्रा तिजोरियों में सॉर्टिंग मशीनें लगाकर आगे बढ़ाया गया। लखनऊ के नए उप कार्यालय में छः मुद्रा सत्यापन और संसाधन प्रणाली (सीवीपीएस) की स्थापना करके गंदे नोटों की निपटान क्षमता बढ़ाई गई है। इसके साथ, रिज़र्व बैंक के 19 कार्यालयों में कुल 54 सीवीपीएस, 28 श्रेडिंग और ब्रिकेटिंग प्रणालियां लगाई गई हैं।

संचलन में बैंक नोट

VII.2 वर्ष 2006-07 के दौरान संचलन में बैंक नोटों का मूल्य 17.5 प्रतिशत तक (वर्ष 2005-06 के दौरान 16.8 प्रतिशत) बढ़ गया। सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की तुलना में आम जनता के पास मुद्रा का अनुपात, विगत वर्षों में लगातार बढ़कर, मार्च 1990 के अंत में सकल घरेलू उत्पाद के 9.5 प्रतिशत से मार्च 2006 के अंत में 11.6 प्रतिशत और पुनः मार्च 2007 के अंत में 11.7 प्रतिशत हो गया है। व्यापक मुद्रा ($एम_3$) की तुलना में आम जनता के पास मुद्रा का अनुपात विगत कुछ वर्षों के दौरान धीरे-धीरे घटती हुई प्रवृत्ति को जारी रखते हुए मार्च 2006 के अंत में 15.1 प्रतिशत से घटकर मार्च 2007 के अंत में 14.6 प्रतिशत हो गया।

VII.3 बैंक नोटों की संख्या वर्ष 2006-07 के दौरान बढ़कर (एक वर्ष पूर्व 2.3 प्रतिशत) 5.2 प्रतिशत हो गई। इस प्रकार बैंक नोटों की संख्या में वृद्धि, मुख्यतः उच्च मूल्यवर्ग के बैंक नोटों, खासकर 1000 रुपए और 500 रुपए मूल्यवर्ग के नोटों के प्रति क्रमिक संरचनात्मक बदलाव के कारण, मूल्य की तुलना में पर्याप्त रूप से कम रही। जबकि वर्ष 2006-07 के दौरान 500 रुपए मूल्यवर्ग के नोटों की संख्या में 23.6 प्रतिशत तक (एक वर्ष पूर्व 19.4 प्रतिशत) की वृद्धि हुई, 1000 रुपए मूल्यवर्ग के नोटों की संख्या में 45.7 प्रतिशत तक (एक वर्ष पूर्व 52.7 प्रतिशत) की वृद्धि हुई। बैंक नोटों की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए चलन में और नए नोट डालने के लगातार प्रयासों के कारण 10 रुपए के बैंक नोटों की संख्या में 14 प्रतिशत की वृद्धि हुई। दूसरी ओर, 2 रुपए और 5 रुपए मूल्यवर्ग के बैंक नोटों की संख्या में वर्ष के दौरान कमी आई जबकि 20 रुपए, 50 रुपए और 100 रुपए मूल्यवर्ग के बैंक नोटों की संख्या प्रायः वर्ष 2005-06 के स्तर पर ही बनी रही।

मुद्रा परिचालन

VII.4 रिज़र्व बैंक ने आम जनता को अच्छी गुणवत्ता वाले बैंक नोट उपलब्ध कराने के अपने प्रयास को जारी रखा। इस उद्देश्य से नये नोटों की नियमित आपूर्ति, गंदे बैंक नोटों के तेजी से निपटान, और नकदी संसाधन गतिविधि को शामिल करते हुए एक बहु-आयामी दृष्टिकोण अपनाया गया। हाल की अवधि में, बैंक नोटों के स्टैपल किए जाने की प्रथा को रोक देने से बैंक नोटों की गुणवत्ता में सुधार को बल मिला है। बैंकों को सूचित किया गया है कि वे आम जनता को केवल स्वच्छ नोट ही जारी करें तथा स्टैपल न किए गए स्थिति में गंदे नोटों को मुद्रा तिजोरियों के माध्यम से रिज़र्व बैंक को परेषित करें। बैंक नोटों की चलन आयु बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे हैं और रिज़र्व बैंक इस संबंध में विभिन्न विकल्पों की तलाश कर रहा है ।

नये बैंक नोटों का मुद्रण

VII.5 संख्या तथा मूल्य दोनों के अनुसार, मुद्रण प्रेसों से बैंक नोटों की आपूर्ति में पिछले वर्ष की तीव्र गिरावट की तुलना में वर्ष 2006-07 में सुधार हुआ है। संख्या के मामले में कुल आपूर्ति वर्ष 2006-07 के दौरान 64 प्रतिशत तक बढ़ी जबकि मूल्य के मामले में कुल आपूर्ति वर्ष के दौरान 115 प्रतिशत तक बढ़ी। वर्ष 2006-07 के दौरान माँग-पत्र की संख्या की दृष्टि से 99.8 प्रतिशत और मूल्य की दृष्टि से 99.0 प्रतिशत की कुल आपूर्ति की गई। मांगपत्र की तुलना में 20 रुपए मूल्यवर्ग के बैंक नोटों की कम आपूर्ति इस कारण से रही कि नई / अतिरिक्त सुरक्षा विशेषताओं के साथ इस मूल्यवर्ग के नोटों का मुद्रण वर्ष 2006-07 के दौरान देरी से शुरु हुआ।

बैंक नोटों की नई/अतिरिक्त सुरक्षा विशेषताएँ

VII.6 बैंक नोटों में आम जनता के विश्वास को बनाए रखने के लिए रिज़र्व बैंक ने भारत सरकार के परामर्श से बैंक नोटों की सुरक्षा विशेषताओं को लागू किए जाने की समय-समय पर समीक्षा की है। इस प्रक्रिया के एक भाग के रूप में रिज़र्व बैंक ने वर्ष 2005-06 के दौरान कई नई/अतिरिक्त सुरक्षा विशेषताओं के लागू किए जाने के साथ 10 रुपए, 20 रुपए, 50 रुपए, 100 रुपए, 500 रुपए और 1000 रुपए मूल्यवर्ग के बैंकनोट जारी करना प्रारंभ किया। इनमें (क) 100 रुपए, 500 रुपए और 1000 रुपए मूल्यवर्ग के नोटों में हरे से नीले रंग में बदलाव के साथ अधातुकृत, चुम्बकीय और मशीन के पढ़ने योग जालीदार सुरक्षा धागा, (ख) उन्नत उत्कीर्ण मुद्रण, (ग) वानस्पतिक अभिकल्प के बदले मूल्यवर्गीय संख्या को शामिल करते हुए आर-पार देखने योग्य उन्नत विशेषता, और (घ) वाटरमार्क विण्डों में महात्मा गाँधी के चित्र के किनारे मूल्यवर्गीय संख्यावाला इलेक्ट्रोटाइप वाटरमार्क शामिल है। नई/अतिरिक्त सुरक्षा विशेषताओं के साथ महात्मा गाँधी श्रृंखला 2005 में सभी मूल्यवर्ग के बैंक नोटों के जारी करने की प्रक्रिया 16 अगस्त 2006 को 20 रुपए मूल्यवर्ग के बैंक नोट जारी करने के साथ वर्ष 2006-07 के दौरान पूरी हुई । बैंक नोटों पर नई/अतिरिक्त सुरक्षा विशेषताओं के साथ चित्रात्मक ब्योरेवाले पोस्टर आम जनता को शिक्षित करने के लिए सभी बैंकों को उपलब्ध कराए गए हैं। रिज़र्व बैंक के क्षेत्रीय कार्यालयों को सूचित किया गया है कि वे संगठनों जैसे रेलवे और पुलिस के प्राधिकारियों के माध्यम से तथा पोस्टरों को क्षेत्रीय भाषाओं में प्रकाशित करके स्थानीय स्तर पर इन सुरक्षा विशेषताओं के प्रति आम जनता में जागरूकता पैदा करें। नए बैंक नोटों की सुरक्षा विशेषताओं से संबंधित विस्तृत ब्यौरा रिज़र्व बैंक की वेबसाइट पर भी डाला गया है।

स्टार श्रृंखला के बैंकनोट जारी किया जाना

VII.7 रिज़र्व बैंक ने वर्ष 2006-07 के दौरान 10 रुपए, 20 रुपए और 50 रुपए के मूल्यवर्ग में स्टार श्रृंखला के बैंकनोट जारी करना प्रारंभ किया। स्टार श्रृंखला के बैंक नोट ठीक महात्मा गाँधी श्रृंखला वाले पहले के बैंक नोट जैसे ही दिखते हैं लेकिन उनमें क्रम संख्या और उपसर्ग के बीच संख्या पैनल में एक अतिरिक्त विशेषता अर्थात *(स्टार) होती है। स्टार श्रृंखला वाले नोटों के पैकेट सामान्यतः 100 की संख्या में होते हैं यद्यपि वे क्रमानुसार नहीं होते हैं। स्टार श्रृंखला प्रणाली, प्रिंटिंग प्रेसों में प्रक्रिया को युक्तिसंगत बनाने तथा पुनर्स्थापन गतिविधि में लगे श्रम को कम करने में सहायता करती है। स्टार श्रृंखला संख्यांकित नए नोट/ नोटों वाले पैकेटों के बैण्ड पैकेटों में ऐसे बैंक नोटों की उपस्थिति का स्पष्ट संकेत देते हैं।

मुद्रा प्रबंध का कंप्यूटरीकरण

VII.8 रिज़र्व बैंक ने क्षेत्रीय कार्यालयों और केंद्रीय कार्यालय के निर्गम विभागों में एक समेकित कंप्यूटरीकृत मुद्रा परिचालन और प्रबंध प्रणाली

(आइसीसीओएमएस) स्थापित करने का कार्य किया है। इस परियोजना में सक्रिय निगरानी में सुरक्षित तरीके से और तुरंत, सक्षम और दोष-मुक्त रिपोर्टिंग और मुद्रा तिजोरी लेन-देनों के लेखांकन तथा निर्गम विभागों और केंद्रीय कार्यालय के बीच सूचनाओं के अबाध प्रवाह के लिए सुविधा प्रदान करने हेतु कंप्यूटरीकरण तथा रिज़र्व बैंक के कार्यालयों के साथ मुद्रा तिजोरियों की नेटवर्किंग भी शामिल है। रिज़र्व बैंक के सभी कार्यालयों ने मुद्रा तिजोरी रिपोर्टिंग प्रणाली (सीसीआरएस) और समेकित कंप्यूटरीकृत मुद्रा परिचालन और प्रबंध प्रणाली -आईडी (आइसीसीओएमएस-आइडी) घटक के मुद्रा तिजोरी लेखांकन मॉड्यूल (सीएएम) पर लाइव-रन शुरु किया। एक बार जब ये दो घटक पूरा कर लिए जाने पर केंद्रीय कार्यालय के मुद्रा प्रबंध विभाग (डीसीएम) में मुद्रा प्रबंध सूचना प्रणाली (सीएमआइएस) का कार्यान्वयन किया जाएगा जिसका परीक्षण पहले ही शुरु किया जा चुका है।

संभावनाएं

VII.9 रिज़र्व बैंक, देश में सक्षम ग्राहक सेवा सुनिश्चित करने के लिए अच्छी गुणवत्ता के बैंक नोट और सिक्कों की पर्याप्त आपूर्ति के माध्यम से की दृष्टि से अपने मुद्रा प्रबंध को संचालित करना जारी रखेगा। रिज़र्व बैंक, बैंक नोटों की संचलन आयु में वृद्धि के लिए विभिन्न विकल्प ढूंढ़ने के अपने प्रयास जारी रखेगा। परिचालन दक्षता में वृद्धि की दृष्टि से प्रणालियों और प्रक्रियाओं को विवेकसम्मत बनाने तथा मुद्रा प्रबंध में अंतरराष्ट्रीय न्यूनतम मानदंडों को स्थापित करने के प्रयत्न भी किए जाएंगे।